प्रयाग माहात्म्य

जिसको

पं० सीतारामजी शास्त्री और पं० रामावतारजी शर्म्मा वैद्य

ने

बहुत परिश्रम से अनेक ग्रन्थों से संग्रह करके छपवाया।

पुस्तक मिलने का पता

पं० रामावतार शर्म्मा वैद्य

तीर्थराज औषधालय, पानदरीबा, प्रयाग

प्रथम वार २०००]   [दाम =)

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

महा हिमकल्याण तैल।

अपनी अपूर्व ठंढक और मनोहर सुगन्धि के कारण यह तैल वास्तव में यथा नामः तथा गुणाः की कहावत सत्य सिद्ध कर रहा है! कमज़ोरी दिमाग़ और सिर दर्द को आराम करके चित्त प्रसन्न रखने में यह अद्वितीय है। सब से बड़ा गुँण इस तैल में यह है कि लगाते ही ५ मिनट के अन्दर कठिन से कठिन सिर दर्द को आराम करके रोते हुये मनुष्य को हंसा देता है। यह हर मौसिम में हर स्वभाव के मनुष्य के लिये अत्यन्त उपकारी है। सिर तथा बदन में इस तैल के मालिस करने से दर्द, घुमरी, मुर्छा, दर्द, जलन, प्यास आँखों के सामने अँधेरा होना आदि बिकार शीघ्र दूर होते हैं तथा आँखों में रोशनी और स्मरण-शक्ति बढ़ती है। दिमाग़ गुलाब के फूल की तरह हलका रहता है। इस तैल के सेवन से बुढ़ापे तक बाल भौंरे के समान काले रहते हैं। बाज़ारू तैलों के व्यवहार करने से बाल जल्द सफेद हो जाते हैं। "महा हिमकल्याण तैल" इन सब दोषों से रहित है। इसको लगाते ही ऐसा जान पड़ता है मानों गुलाब के बाग़ से ताजे फूलों की सुगन्धी आ रही है। इसकी खुशबू अत्यन्त मनोहर है! मूल्य एक शीशी का ॥)

ज्वरांकुश वटी

अंतरा बुखार की अक्सीर दवा।

ज्वर, जूड़ी, अंतरा, तिजारी, रोज जाड़ा देकर आने वाला ज्वर और तिल्ली की अक्सीर दवा। ऊपर लिखे हुये रोगों से पेट में यकृत और तिल्ली होजाती है इससे लाखों मनुष्य मरते हैं। अच्छे वैद्य डाक्टर न मिलने से व खर्च की कमी होने से लाखों आदमी रोज इन रोगों से काल के ग्रास हो जाते हैं और गाँवों में तो बहुत ज्यादा लोग इन सब रोगों से मरते हैं। इस विपत्ति को दूर करने के लिये हमने एक ऐसी अपूर्व दवा निकाली है कि जिससे एक दो दिन के सेवन से ज्वर का आना छूट जाता है और कुछ दिन के सेवन से यकृत और तिल्ली गल जाती है। आज तक इस दवा को खाकर अँतरा, तिजारी, चौथिया वाले एक भी हताश नहीं हुए। यह दवा जादू के माफिक अपना असर करती है इस दवा की परीक्षा एक बार अवश्य कीजिए ज्वर छूटने के बाद इन गोलियों का कुछ दिन तक सेवन किया जाय तो कमज़ोरी दूर हो जाती है और ज्वर की जड़ बिल्कुल साफ़ हो जाती है और नया शुद्ध खून उत्पन्न होता है जिस स्थान में ज्वर अधिक उत्पन्न होता है वहाँ पर इन गोलियों को सुबह शाम सेवन करने से मनुष्य ज्वर से बिलकुल बचे रह सकते हैं। २० गोली का दाम ॥)

सूचीपत्र और दवा मँगाने का पताः—पं० रामावतार शर्म्मा वैद्य
तीर्थराज औषधालय पानदरीबा प्रयागराज।

॥ अथ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां,
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि पर पद प्राप्तये प्रस्थितस्य ।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां,
वीजं धर्मद्रुमस्यप्रभवतु भवतां भूतये ब्रह्मधाम ॥

ॐ विष्णुः ३ ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् श्रीहंसस्य चित्सदानन्दरूपिणो ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भिताविद्यायोगात् कालकर्मस्वभावाविर्भूतमहत्तत्त्वोदिताहङ्कारत्रितयोद्भूतवियदादिपञ्चकेन्द्रियदेवतानिर्मिताण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लोके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूतेन सकललोकपितामहेन ब्रह्मणा सृष्टिं कुर्वता तदुद्धरणाय प्रार्थितेन महापुरुषरूपिणा धृतवाराहावतारेण ध्रियमाणायामस्यां भूर्लोकसंज्ञितायां धरित्र्यां सप्तद्वीपमण्डितायां क्षीरोदाद्यब्धिद्विगुणकुशादिद्वीपवलयीकृते लक्षयोजनविस्तीर्णे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे स्वर्गस्थितामराद्याशासितावतारे गङ्गादिसरिद्भिः पाविते निखिलजनपावने शौनकादिमुनिकृतवसतिके नैमिषारण्ये आर्य्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे (हिमवत्पर्वतैकदेशे) श्रीभगवन्मार्त्तण्डकृपापात्रकालत्रितयज्ञगर्गवाराहाचार्य्यादिगणितायां संख्यायां श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे द्वितीययामे तृतीयमुहूर्त्ते श्रीश्वेतवाराहनाम्नि प्रथमकल्पे स्वायंभुवस्वारोचिषोत्तमतामसरैवतचाक्षुषेति षण्मनूनामतिक्रम्यमाणे सम्प्रति सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितम-

कलियुगस्य प्रथम चरणे बौद्धावतारे श्रीमन्नृपतिविक्रमार्कसमयात् संवत्सराणां समयेनातिक्रान्तानां षष्ट्यब्दानां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनामदिवसनक्षत्रे अमुकनाममहानक्षत्रे अमुकनामयोगे अमुकनामकरणे अमुकनाममुहूर्ते अमुकस्थेषु सूर्य्यादिग्रहेषु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभावस्थायाममुकगोत्रोऽमुकप्रवरोऽमुकराशिरमुकशर्मा सपत्नीकोऽहम् कायिक, वाचिक, मानसिक, त्रिविधपातकोपपातक शमनार्थं तथा पङ्क्तिभेदकरणगोहत्या, ब्रह्महत्यादि महापातकनाशनपूर्वकमत्रक्षेत्रे स्नानकरणजन्यसकलफलप्राप्त्यर्थमायुरारोग्यतादिसकलफलसिद्ध्यर्थं सकलाङ्गसम्पन्नं तीर्थस्नानं तर्पणंश्राद्धंदानादिकञ्चाहंकरिष्ये ।

इति संकल्प्य स्नानं कृत्वा तिलतर्पणादिकं कुर्यात् ।

अथ प्रयाग माहात्म्य प्रारम्भः

सितासिते यत्र तरङ्ग चामरे नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके ।
नीलातपत्रं वट एव साक्षात्सतीर्थराजो जयति प्रयागः ॥

प्रयाग का माघमेला भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है । इस मेले में सम्मिलित होने तथा श्री त्रिवेणीजी में स्नान करके अक्षय पुण्य लूटने के लिए हिन्दू मात्र लालायित रहते हैं । वास्तव में यह स्थान समस्त तीर्थों में श्रेष्ठ समझा जाता है, अतएव लोग इसे तीर्थराज कहते हैं । इसका यह महत्व आज का नहीं है बल्कि अति प्राचीन काल में भी यह इसी प्रकार अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखा जाता था । तीर्थराज प्रयाग के सम्बन्ध में आश्वलायन ने भी लिखा है—

सितासिते सरिते यत्रसंगते तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति ।
येवैतन्वं विसृजन्ति धीरास्तेजनासो अमृतत्वं भजन्ते ॥
शाखान्तरेऽपि "(ते वै जनासो अमृतं भजन्ते)" इत्यादि ॥

श्वेत और कृष्ण जल वाली गङ्गा तथा यमुना नामक महानदियों के सङ्गम में स्नान करने वाले सत्पुरुष अन्त में स्वर्ग जाते हैं, और जो तीर्थराज ही में प्राण त्यागते हैं वे मुक्त हो जाते हैं । हठ से भी प्राण त्यागने वाला आत्मघात के प्रायश्चित्त का अधिकारी नहीं होता । आगे चलकर परिशिष्ट में लिखा है–

"यत्र गङ्गा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती ।
यत्र सोमेश्वरो देवस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव" इति ।

जहाँ गङ्गा, यमुना, सरस्वती और सोमेश्वर महादेव जी हैं उन प्रयाग तीर्थराज के सेवन से मुझे मुक्त कीजिये ।

कौर्मे प्रयागमाहात्म्यं प्रकृत्योक्तम्ः—

इदंसत्यं द्विजातीनां साधूनामात्मजस्य च ।
सुहृदां च जपेत्कर्णे शिष्यस्यानुगतस्य च ॥
इदं धन्यमिदं स्वर्ग्यमिदं मेध्यमिदं सुखम् ।
इदं पुण्यमिदं रम्यं पावनं धर्म्यमुत्तमम् ॥
महर्षीणामिदं गुह्यं सर्वपापप्रमोचनं ।
अत्राधीत्य द्विजोऽध्यायं निर्मलत्वमाप्नुयात् ॥
इदं कल्येसमुत्थाय पठतेऽथ शृणोति वा ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युलोकं न गच्छति ॥
मात्स्येऽपि प्रयागमाहात्म्यं शृणिवत्युपक्रम्य—
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्रसंशयः ॥

यह सत्य है। द्विजाति, साधु, पुत्र, मित्र और अनुगत शिष्यों के कान में अच्छी तरह से समझाकर कह देने योग्य है। यह प्रयाग तीर्थ धन्य है। सुख और स्वर्ग देने वाला है। पवित्र और मनोहर सब तरह के पापों को दूर करने वाला है। यह बहुत गुप्त बात है, मनुष्य यहाँ वेद पढ़कर निर्मल हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर इदं सत्यमित्यादि वचनों को पढ़ता, पढ़ाता तथा सुनता है, वह सब पापों से रहित होकर मुक्त हो जाता है।

युधिष्ठिर उवाच (मत्स्य पुराणे)

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि पुरा कल्पे यथाश्रुतम् ।
ब्रह्मणा देवमुख्येन यथावत्कथितं मुने ॥

धर्मपुत्र युधिष्ठिर महर्षि मार्कण्डेय जी से पूछे कि महाराज, पहले कल्प में जैसे ब्रह्मा जी से कहा हुआ फल सुने हैं, उसी तरह से सुनने की इच्छा है।

कथं प्रयागगमनं नराणां तत्र कीदृशम् ।
मृतानां का गतिस्तत्र स्नातानां तत्रकिंफलम् ॥

प्रयाग कैसे जाना चाहिये, उसके सेवन से मनुष्यों को क्या फल मिलता है, वहाँ शरीर त्यागने से क्या फल होता है, और स्नान करने से कौन सा फल प्राप्त होता है ।

ये वसन्ति प्रयागे तु ब्रूहि तेषां च किं फलम् ।
एतत्सर्वं समाख्याहि परं कौतूहलं हि मे ॥

जो प्रयाग में निवास करते हैं उन्हें क्या फल मिलता है । कृपया ये सब बातें कहिये, सुनने की बड़ी उत्कण्ठा है ।

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

कथयिष्यामि ते वत्स यच्चेष्टं यच्च तत्फलम् ।
पुरा ऋषीणां विप्राणां कथ्यमानं मयाश्रुतम् ॥

मार्कण्डेय जी ने कहा कि प्रिय वत्स, मैं जो कुछ ब्राह्मण ऋषियों से सुना हूं सो सब फल संक्षेप में कहूंगा ।

षष्टिं धनुः सहस्राणि यानि रक्षन्ति जाह्नवीम् ।
यमुनां रक्षति सदा सविता सप्तवाहनः ॥
प्रयागं तु विषेशेण स्वयं रक्षति वासवः ।
मण्डलं रक्षति हरिर्दैवतैः सह संगतः ॥
तं वटं रक्षति शिवः शूलपाणिर्महेश्वरः ।
अधर्मेणाऽवृतो लोको नैव गच्छति तत्पदम् ॥

यहाँ गङ्गा, यमुना, प्रयागमण्डल, और वट यही प्रधान सेवनीय हैं, परन्तु अधर्मी किसी तरह से यहाँ नहीं आ सकता ।

तपनस्य सुता देवी त्रिषुलोकेषु विश्रुता ।
समागता महाभागा यमुना यत्र निम्नगा ॥

यत्र संनिहितो देवः साक्षाद्देवो महेश्वरः ।
दुष्प्रापं मानुषैः पुण्यं प्रयागं तु युधिष्ठिर ॥
देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्धचारणाः ।
तत्रोपस्पृश्य राजेन्द्र स्वर्गलोकमुपाश्नुते ॥

जहाँ सूर्य्य-पुत्री त्रिलोक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ यमुना, और वट रूपधारी शूलपाणि शिवजी विद्यमान हैं, वही प्रयाग ब्रह्म स्थान मनुष्यों को अत्यन्त दुर्लभ है। देव, दानव, गन्धर्व, और सिद्धादि देवयोनि सब इस प्रयाग का जल सेवन करके स्वर्ग चले जाते हैं।

(वाराहपुराणे)

पुनरन्यत् प्रवक्ष्यामि गुह्यं सर्व जनप्रियम् ।
सुलभं धर्मकर्मणां दुर्लभं पापकर्मणाम् ॥

और भी कुछ गुप्त बातें तुम्हें बताता हूं। यह वट मूल पापी प्राणिमात्र के लिये अत्यन्त दुर्लभ है, और धर्मात्माओं के लिये सुलभ है।

वट मूलेति विख्यातं रहस्यं परमंमम ।
ब्रह्मणा यत्र चेष्टं हि क्रतूनां च शतैरपि ॥
तत्प्रयागमिति ख्यातं सर्वपापप्रणाशनम् ।
ब्रह्मणः क्षेत्रमित्युक्तं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥

जहाँ ब्रह्मा ने सैकड़ों यज्ञ किये हैं, उसी को प्रयाग तीर्थ कहते हैं। यह अन्वर्थ संज्ञा है और ब्रह्मा का क्षेत्र है।

तत्र चैकार्णवे सर्वे नष्टे स्थावरजङ्गमे ।
सर्वत्र जलपूर्णेतु न प्राज्ञायत किंचन ॥
एतद्वटं महादेवि विष्णुमूलं महाद्रुमम् ।
मम प्रसादात्सुश्रोणि तदेकं तिष्ठतेतदा ॥
एतद्वटस्य माहात्म्यं देवि केचिन्नजानते ।

मुक्त्वा भागवतान् शुद्धान्मम कर्मपरायणान् ।
छतत्कृतोदकाभद्रे दिवं यान्ति न संशयः ॥

जब महाप्रलय के समय सारा संसार नष्ट हो जाता है। तब विष्णु मूल केवल यही एक वट मेरी कृपा से रहता है। हे देवि, इसका माहात्म्य शुद्ध भगवद्भक्त जो मेरी ही सेवा में लीन हैं, उनके सिवा कोई नहीं जानता। इसी वट को जल समर्पण कर लोग स्वर्ग चले जाते हैं।

(मात्स्ये)

यत्र ते द्वादशाऽदित्यास्तपन्ते रुद्रमाश्रिताः ।
निर्दहन्ति जगत्सर्वं वटमूलं न दह्यते ॥
नष्टचन्द्रार्कपवनं यदा वैकार्णवं जगत् ।
स्वपते तत्र वै विष्णुर्यजमानः पुनः पुनः ॥

महाप्रलय में सब कुछ नष्ट हो जाता है, परन्तु वटमूल नहीं नष्ट होता। इसीपर जलमय प्रलयकाल में श्री विष्णुजी का शयन होता है।

देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्धचारणाः ।
सर्वे सेवन्ति तत्तीर्थे गङ्गायमुनसंगमम् ॥
श्रवणात्तीर्थराजस्य नामसंकीर्त्तनादपि ।
मृत्तिका लभनाद्वाऽपि नरः पापात्प्रमुच्यते ॥

देव, दानव, गन्धर्व और महर्षि सब इस गङ्गा यमुना के सङ्गम का सेवन करते हैं। तीर्थराज के नाम का श्रवण तथा उसका कीर्तन करने से, और वहां की मृत्तिका प्राप्त करने से मनुष्य पाप से छूट जाता है।

यथा सर्वत्र लोकेषु ब्रह्मा सर्वत्र पूज्यते ।
तथा सर्वेषु भूतेषु प्रयागः पूज्यते बुधैः ॥

प्रयागस्तीर्थराजश्च सत्यमेव युधिष्ठिर ।
ब्रह्माऽपि स्मरते नित्यं प्रयागं तीर्थमुत्तमम् ॥
तीर्थराजमनुप्राप्य न चान्यत्किंचिदर्हति ।
कोहि देवत्वमासाद्य मानुषत्वं चिकीर्षति ॥
अनेनैवानुमानेन त्वं ज्ञास्यसि युधिष्ठिर ।
यथा पुण्यमपुण्यं वा तथैवं कथितं मया ॥

जैसे सब लोकों में ब्रह्मा सब जगह पूजे जाते हैं, उसी तरह सब भूतों में प्रयाग विद्वानों से पूजनीय है। हे युधिष्ठिर ! ब्रह्मा भी उत्तम तीर्थराज का स्मरण नित्य ही करते हैं। तीर्थराज में पहुँच जाने पर फिर मनुष्यों को कुछ करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि इससे बढ़कर संसार में कोई उपास्य नहीं, तो ऐसा कौन जड़ है, जो देवयोनि को पाकर मनुष्ययोनि में आने की इच्छा करेगा । हे युधिष्ठिर ! इसी से तुम अनुमान कर लो कि यह कैसा दुर्लभ पुण्य या अपुण्य क्षेत्र है। मैंने जैसा देखा है वैसा ही तुमसे सत्य कह रहा हूँ।

शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं पुनरेवतु ।
नैमिषं पुष्करं चैव गोतीर्थं सिन्धुसागरम् ॥
गया च धेनुकं चैव गङ्गासागरमेव च ।
एते चान्ये च वहवो ये च पुण्याः शिलोच्चयाः ॥
दशतीर्थसहस्राणि त्रिंशत्कोट्य तथा पराः ।
प्रयागे संस्थिता नित्यमेवमनीषिणाः ॥

हे युधिष्ठिर ! फिर भी इस तीर्थराज की महिमा देखो कि नैमिषारण्य, पुष्कर, गोतीर्थ, सिन्धुसागर, गया, धेनुक, गङ्गासागर तथा बड़े २ पवित्र पर्वत, और संसार में जितने तीर्थ हैं, वे सब प्रयाग में आकर निरन्तर वास करते हैं, यह विद्वानों का कथन है।

(पद्मपुराणे)

सितासिते संगमेयो मनसा स्नानमाचरेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो याति ब्रह्मसनातनम् ॥

इड़ा, पिङ्गला स्वरूप गङ्गा यमुना के संगम में मानसिक स्नान करने से मनुष्य सब तरह के पापों से मुक्त होकर सनातनब्रह्म में लीन हो जाते हैं ।

शेषउवाचः—

समस्तानि च तीर्थानि सकलादेवजातयः ।
सस्त्रीका ऋषयोमाघे सर्वे यान्ति प्रयागके ॥

शेष जी बोले, सब तीर्थ, समस्त देवजातियाँ तथा सपत्नीक ऋषिगण माघ मास में प्रयाग जाते हैं ।

राजसूय सहस्रस्य वाजिमेध शतस्य च ।
माघे सितासिते पुण्यं मज्जतो भवति ध्रुवम् ॥

माघ में त्रिवेणी जी का स्नान हज़ार राजसूय तथा सौ अश्वमेध यज्ञ के बराबर है ।

सकामाः कामसम्पन्ना निष्कामा मुक्तिभागिनः ।
स्नाता भवन्ति वै माघे गङ्गायमुनसंगमे ॥

सकामी (गृहस्थ) माघ में त्रिवेणी स्नान करने से सिद्ध मनोरथ होते हैं और निष्काम भव-बाधा से छूटकर ब्रह्म में लीन हो जाते हैं ।

पुत्रपौत्रावलालाभ आधिपत्यं च प्रार्थितम् ।
स्वभोगफलदे माघे प्रयागेऽदः फलंकियत् ॥

पुत्र, पौत्र, स्त्री तथा राज्य प्राप्ति फल माघ स्नान के सामने क्या है, क्योंकि माघ स्नान से स्वर्ग तक प्राप्त किया जा सकता है ।

त्रिविधं ज्ञातमज्ञातं नाना जन्मसुसंचितम् ।
करोति भस्मसात् सद्यः प्रयागेमाघमज्जनात् ॥

प्रयाग में माघ स्नान अनेक जन्मसंचित त्रिविध (कायिक, वाचिक, मानसिक) ज्ञाताज्ञात पाप को शीघ्र नष्ट करता है ।

प्रयागे माघमासे तु वेणीतीर्थोदविन्दुना ।
यद्गात्रंस्पृशते नूनं मुच्यतेऽसौ महाभयात् ॥

माघ में जिसका शरीर, त्रिवेणी जल के एक विन्दु को स्पर्श करता है, वह हर तरह के भय से छूट जाता है ।

माघमासे प्रयागस्य दर्शनं दुर्लभं नृणाम् ।
किंपुनः स्नानपानादिफलं वाच्यं मुनीश्वराः ॥

माघ में प्रयाग का दर्शन ही मनुष्यों को दुर्लभ है, स्नान और पान के फल को कहाँ तक कहें ।

अन्यस्माल्लक्षगुणितं गङ्गायमुनसंगमे ।
फलं पश्चिमवाहिन्यामनन्तं मज्जनेमतम् ॥

अन्य स्थानों के अपेक्षा त्रिवेणी में स्नान करने से लाख गुना अधिक फल होता है, और पश्चिम वाहिनी गङ्गा में तो अनन्त फल होता है ।

पश्चिमाभिमुखीगंगा कालिंद्या सहसंगता ।
हन्तिकल्पकृतं पापं सा माघेत्वतिदुर्लभा ॥

पश्चिमाभिमुखी होकर गंगा जब यमुना से मिलती हैं, तो कल्पकृत संचित पापों को नाश करती हैं । वही माघ में दुर्लभ हैं ।

तस्यांमाघेमुहूर्तोपि देवानामपि दुर्लभः ।
विज्ञेयामुक्तिजननी सा वेण्यामृतरूपिणी ॥

वही पश्चिमाभिमुखी गङ्गा माघ में देवताओं के लिये भी मुहूर्तमात्र दुर्लभ हैं, वही अमृतरूप वेणी संसार को मुक्ति देने वाली हैं।

प्रयागे परकालेयत् पापं संपादितं नरैः।
नश्येत् पश्चिमवाहिन्यां माघे तद्विनिश्चितम्॥

प्रयाग में दूसरे समय का किया हुआ पाप पश्चिम वाहिनी गङ्गा-स्नान करने से नाश हो जाता है। माघ में तो विशेषतः नाश होता है।

महाभाग्योदयेनात्र माघः संप्राप्यते नरैः।
अपुनर्जन्मदं यत्र सितासितजलं खलु॥

मनुष्य बड़े भाग्य से माघ में त्रिवेणी पहुँचते हैं। जहाँ स्नान करने से मनुष्य भवसागर को पार कर मुक्ति पाते हैं।

गर्भे न मज्जतेजन्तुः प्रयागे माघमज्जनात्।
तीर्त्वा भागवतींमायां वैकुण्ठे वसते नरः॥

प्रयाग में माघ स्नान करने से मनुष्य फिर गर्भ में नहीं जाता और वैष्णवी माया को पार कर वैकुण्ठ वास करता है।

अश्वमेधादिकृद्भ्योयः प्रयागे माघमासकृत्।
माघस्नाय्यनयोर्मध्ये श्रेष्ठाच्छ्रेष्ठतमोमतः॥

माघ में स्नान करनेवाला और अश्वमेध यज्ञ करनेवाला इन दोनों में माघ मास स्नान करनेवाला ही श्रेष्ठ है।

यत्र कुत्रापि यो माघे प्रयागस्मरणान्वितः।
करोति मज्जनं तीर्थे सलभेद्गांगमज्जनम्॥

यदि कहीं भी मनुष्य माघ में प्रयाग का स्मरण करके स्नान करता है तो उसको गङ्गा स्नान का फल मिलता है।

वापी कूप तड़ागेषु नदीषु च यथोत्तरम् ।
नदेषु देवखातेषु सरितां संगमेषु च ॥
महानदीषु कालिंद्यां गंगायांच यथोत्तरम् ।
अधिकंफलमुद्दिष्टं माघस्नाने महर्षिभिः ॥

वापी, कूप, तड़ाग, नदी, नद, देवखात तथा नदियों के सङ्गमों में क्रम से अधिक फल है। इसी प्रकार महानदी, यमुना तथा गङ्गा में उत्तरोत्तर अधिक फल होता है, ऐसा महर्षियों का मत है।

योऽशक्तोस्मिन्महायोगे देशकाल गदादिना ।
सोऽनुकल्पेनकुर्वीत श्रद्धया माघमज्जनम् ॥

देश, काल रोगादि के कारण जो मनुष्य इस महायोग में स्नान करने की शक्ति नहीं रखता वह गौण माघ स्नान करे।

पक्षपक्षार्द्धं पंचत्रिदिनेष्वेकदिनेऽथवा ।
प्रयागे माघमासेतु मज्जतां फलमुच्यते ॥

एक पक्ष, एक सप्ताह, पांच दिन, तीन दिन अथवा एक दिन भी माघ में जो मनुष्य त्रिवेणी स्नान करता है, उसका फल कहते हैं।

अविमुक्ते प्रभासे च गङ्गासागरसंगमे ।
यत्फलं तद्भवेन्माघे वेण्यां सप्ताहमज्जनात् ॥

काशी, प्रभास तथा गङ्गासागर सङ्गम में स्नान करने से जो फल मिलता है, वह माघ में त्रिवेणीस्नान एक ही सप्ताह करने से प्राप्त होता है।

प्रयागे पञ्चरात्रं यः स्नाति माघे नरोत्तमः ।
दिव्यभोगानसौनेतुं चन्द्रवद्वर्द्धते फलम् ॥

जो नर श्रेष्ठ प्रयाग में पांच रात भी स्नान करता है, वह सब भोगों को प्राप्त करने के लिये चन्द्रमा के समान बढ़ता है।

शतवर्षाणि यो विप्रः कुर्यादनशनंव्रतम् ।
प्रयागे त्रिदिनं माघे यः स्नातस्तावुभौसमौ ॥

तीन ही दिन माघ स्नान का फल सौ वर्ष अनशन व्रत के बराबर होता है।

अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्योगाभ्यासेनयत्फलम् ।
प्रयागे माघमासे तु संगमे मज्जतस्त्र्यहम् ॥

अश्वमेधादि यज्ञों से तथा योगाभ्यास से जो फल मिलता है, वह त्रिवेणी स्नानमात्र ही से प्राप्त होता है।

रविग्रहे कुरुक्षेत्रे स्वर्णभारेण यत्फलम् ।
प्रयागे मज्जतेमाघे दिवसे दिवसे फलम् ॥

सूर्य्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में स्वर्णभार के दान से जो फल प्राप्त होता है, वह त्रिवेणी स्नान ही से प्रतिदिन मिलता है।

कोटिगोदानजं पुण्यं प्रत्यहं स्वर्णदानजम् ।
प्रत्यहं लभतेवेण्यामेवमाहुर्मनीषिणः ॥

कोटि गोदान से तथा प्रतिदिन सुवर्णदान से जो पुण्य मिलता है, वही पुण्य त्रिवेणी स्नान से प्रतिदिन मिलता है। ऐसा महर्षि कहते हैं।

नारी वा पुरुषो वापि वली वा दुर्बलोपिवा ।
लभतेसकलान्कामान् वेण्यां स्नानेन निश्चितम् ॥

स्त्री, पुरुष, बलवान् तथा दुर्बल सभी के मनोरथ त्रिवेणी स्नान करने से पूर्ण होते हैं।

ब्राह्मणः क्षत्रविट्शूद्राः प्रतिलोमानुलोमजाः ।
आश्रमाब्रह्मचर्य्याद्या माघेस्नांति मुनीश्वराः ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, प्रतिलोमानुलोम सभी जातियाँ तथा ब्रह्मचर्य्यादि आश्रम सभी माघ में त्रिवेणी स्नान करते हैं।

यथाऽधिकारः सर्वेषां विष्णुभक्तौ बुधैः स्मृतः ।
माघस्नाने तथा ज्ञेयो नात्रकार्य्या विचारणा ॥

जिस प्रकार विष्णु की भक्ति करने का सभी को अधिकार है । उसी प्रकार माघ स्नान करने में भी सभी को अधिकार है । इसमें विचार नहीं करना चाहिये ।

चान्द्र सावन सौराख्यैः प्रमाणैर्माघमज्जनम् ।
यथासंभवमेकेन प्रोक्तं कुर्वीत मानवः ॥

चान्द्र, सावन, और सौर मास इनमें किसी भी एक मास के प्रमाण से मनुष्यों को स्नान करना चाहिये ।

अमां वा पूर्णमासीं वा स्नायादारभ्यभक्तितः ।
पक्षद्वयमिदं चान्द्रं विंध्यभागाद्विकल्पितम् ॥

अमावास्या से अमावास्या तक तथा पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का जो मान होता है उसको चान्द्र मास कहते हैं ।

॥ अथ प्रयागस्मरण महिमा ॥

(मात्स्ये) प्रयागं संस्मरन्नित्यं सहास्माभिर्युधिष्ठिर ।
स्वयं प्राप्स्यसि राजेन्द्र स्वर्गलोकं न संशयः ॥
(स्कान्दे) बहुवाल्पतरं वापि पापं यस्य नराधिप ।
प्रयागं स्मरमाणस्य सर्वमायाति संक्षयम् ॥
प्रयागं स्मरमाणश्च यस्तु प्राणान् परित्यजेत् ।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति वदन्ति मुनिपुङ्गवाः ॥

हे राजा युधिष्ठिर ! हम लोगों के साथ प्रतिदिन प्रयाग का स्मरण करते हुये तुम्हें निस्सन्देह ही स्वर्ग मिलेगा । बहुत या कम पाप वाले मनुष्य जब प्रयाग का स्मरण करते हैं तो उनके सब पाप नष्ट हो जाते हैं, और प्रयाग का स्मरण करते

हुये जो शरीर त्याग करते हैं, वे ब्रह्मलोक में पहुँचते हैं। यह श्रेष्ठ मुनियों का वचन है।

॥ अथ प्रयागनाममहिमा ॥

(स्कान्दे) मज्जागतानि पापानि बहुजन्मार्जितान्यपि।
प्रयागनाम श्रवणात् क्षीयन्तेऽतीवविह्वलम् ॥
नाममात्रस्मृतेर्यस्य प्रयागस्यत्रिकालतः।
स्मर्तुःशरीरे नो जातु पापं वसति कुत्रचित् ॥
(ब्राह्मे) तीर्थराजं तु ये यान्ति येस्मरन्ति सदाभुवि।
ते सर्वपापनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

बहुजन्म से किये हुये शरीर मात्र में व्याप्त भी पाप प्रयाग का नाम सुनते ही अत्यन्त विह्वल हो करके नष्ट हो जाते हैं। केवल प्रयाग नाम मात्र ही का त्रिकालस्मरण करनेवाले के शरीर में कभी पाप नहीं रहता। जो तीर्थराज जाते हैं या स्मरण करते हैं, वे हर तरह के पापों से छूट कर अलभ्य मुक्ति पाते हैं।

॥ अथ प्रयाग शब्द निर्वचन ॥

(स्कान्दे) प्रकृष्टं सर्व योगेभ्यः प्रयागमिति गीयते।
दृष्ट्वा प्रकृष्टं यागेभ्यः पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभिः ॥
प्रयागमिति तन्नाम कृतं हरिहरादिभिः।

सब यज्ञों से उत्कृष्ट प्रयाग कहा जाता है। श्रीविष्णु भगवान् और शिवजी यहाँ के यज्ञों को दक्षिणादि से पुष्ट होने के कारण इस तीर्थराज का नाम प्रयाग किये।

॥ अथ प्रयाग गमनं काशीखण्डे ॥

जन्मान्तरेस्वसंख्येषु यः कृतः पापसंचयः।
दुष्प्रणोद्योहि नितरां व्रतैर्दानैस्तपोजपैः ॥

सतीर्थराजगमनोद्यतस्य शुभजन्मनः ।
अङ्गेषुव्येपते ऽत्यर्थं द्रुमोवातहतोयथा ॥
ततः क्रान्तार्द्धमार्गस्य प्रयाग दृढ़चेतसः ।
पुंसः शरीरान्निर्यातुमपेक्षेत पदान्तरम् ॥

असंख्य जन्मान्तर में जो पाप संचय किया है, वह बहुत कष्ट तथा व्रत, दान, तप और जप से नष्ट होता है। परन्तु तार्थराज जाने की तैयारी करने ही से हवा से हिलाये हुये पेड़ की तरह कांपता है, और दृढ़ चित्त करके आधा मार्ग समाप्त करने पर शरीर से निकल कर भाग जाता है।

(ब्राह्मे) प्रयागाभिमुखो भूत्वा पादमेकमपिप्रभो ।
स्मरन्नागच्छते जन्तुः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

प्रयाग के तरफ मुंह करके एक पग चलने पर तथा प्रयाग का स्मरण करके चलने पर जीव सब पापों से छूट जाता है।

॥ अथ वटमहिमा ॥

तत्रचाऽस्ते वटोदिव्यः सर्वदेवमयोमहान् ।
तस्य संस्मरणादेव सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
मूलंविष्णुः स्वयं साक्षात्स्कन्धा लक्ष्मीःस्वयंशुभा।
पत्राणि भारतीदेवी पुष्पाणि विबुधेश्वराः ॥
ब्रह्माफलानि सर्वाणि सर्वाधारो हरिः प्रभुः ।
वेदशास्त्रपुराणानि दानतीर्थव्रतानि च ॥
तानिसर्वाणि वर्तन्ते प्रयागवटके शुभे ।
प्रयागस्य वटं पुण्यं यः समाश्रित्य पुण्यकृत् ॥
यानि श्रेयांसि कुरुते तदानन्त्याय कल्पते ।
यः पुमान् वटमाश्रित्य सर्वदेवेश्वरं हरिम् ॥

पूजयेत् परया भक्त्या तस्य वासो हरेः पुरे।
पूर्वजन्मार्जितैःपुण्यैर्लब्ध्वा क्षेत्रमनुत्तमम् ॥
प्रयागवटमासाद्य मुक्तोभवति पातकी।
वेण्यांस्नात्वा महात्मानो वटमासाद्य भक्तितः।
हृषीकेशं समभ्यर्च्य यान्ति विष्णोः परंपदम् ॥

वहाँ पर सर्वदेवमय एक महान् वट है। उसके स्मरण ही से सब पाप छूट जाते हैं। उसके मूल विष्णु स्वरूप, शुभ स्कन्ध लक्ष्मी स्वरूप, पत्र सरस्वती स्वरूप, फूल इन्द्र स्वरूप, फल ब्रह्मा स्वरूप और सर्वाधार श्री विष्णु भगवान् हैं। उस प्रयाग के शुभ वट में वेद, शास्त्र, पुराण, दान, तीर्थ तथा व्रत सभी निवास करते हैं। जो कोई उस वट के आश्रित्य होकर पुण्य करते हैं, वे अनन्त पुण्य को प्राप्त होते हैं और जो कोई परम भक्ति से उस वट का आश्रयण करके सर्वदेवेश्वर श्रीविष्णु भगवान् का पूजन करते हैं, उनका निवास हरि के पुर में होता है। पूर्व जन्म के संचित पुण्यों से इस सर्वोत्तम क्षेत्र को प्राप्त होते हैं। पापी प्रयाग-वट को पाकर मुक्त हो जाते हैं। महात्मा लोग त्रिवेणी स्नान कर, भक्तिपूर्वक वट को पाकर हृषीकेश की पूजा करने पर विष्णु भगवान् के परम पद को प्राप्त होते हैं।

॥ अथ गङ्गामहिमा ॥

(महाभारते)

तपसा ब्रह्मचर्य्येण यज्ञैस्त्यागेन वा पुनः।
गतिं यां लभते जन्तुर्गङ्गां संसेव्यतां लभेत्।
स्पृष्टानि येषां गांगेयैस्तोयैर्गात्राणि देहिनाम्।
गांत्यक्त्वामानवा विप्र दिवि तिष्ठन्ति ते जनाः ॥

पूर्वे वयसि कर्माणि कृत्वा पापानि ये नराः ।
पश्चाद्गङ्गां निषेवन्ते ते प्रयान्त्युत्तमां गतिम् ॥
यावदस्थि मनुष्याणां गंगातोयेषु तिष्ठति ।
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥

(ब्रह्माण्डपुराणे)

अनाशकं गृहीत्वा यो गङ्गातीरे मृतो नरः ।
सद्य एव परं मोक्षमाप्नोति पितृभिः सह ।
मनुष्यदेहं संश्रित्य यदि गङ्गा न संश्रिता ।
गर्भवासादिशमनं न तेषां जायते क्वचित् ॥
पितृनुद्दिश्य यो भक्त्या पायसं मधुसंयुतम् ।
गुडसर्पिस्तिलैः सार्धं गङ्गाम्भसि विनिक्षिपेत् ॥
तृप्ता भवन्ति पितरस्तस्य वर्षशतं हरे ।
यच्छन्ति विविधान्कामान् परितुष्टाःपितामहाः ॥
कृतेयुगे तु तीर्थानां पुष्करं परमं मतम् ।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गा विशिष्यते ॥
त्रिभिः सारस्वतं तोयं सप्तभिस्त्वथ यामुनम् ।
नार्मदं दशभिर्मासैर्गाङ्गं वर्षेण जीर्यति ॥
सर्वत्र सुलभागङ्गा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा ।
गङ्गाद्वारे प्रयागे च गङ्गासागरसंगमे ॥
तेषु स्नात्वादिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः ।
सर्वानन्दप्रदायिन्यां गंगायां यो नरोत्तमः ॥
अष्टाक्षरं जपेद्भक्त्या मुक्तिस्तस्यकरेस्थिता ।
नमोनारायणायेति प्रणवाद्योऽष्टवर्णकः ॥

पूजितायां च गंगायां पूजिताः सर्वदेवताः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूजयेदमरापगाम् ॥

तप, ब्रह्मचर्य्य, यज्ञ और दान से जिस गति को मनुष्य पाते हैं, वही गति श्रीमती गङ्गा जी की सेवा करके निस्सन्देह पा जाते हैं। जिनके शरीर गङ्गाजल को स्पर्श करते हैं, वे पृथिवी को छोड़ कर स्वर्ग चले जाते हैं। पहले अवस्था में पाप कर्म कर के जो मनुष्य अनन्त गङ्गा जी की सेवा करते हैं, वे सब पापों से छूट कर उत्तम गति को पाते हैं। जब तक हड्डी गङ्गाजल में रहती है, उतने ही हज़ार वर्ष वे स्वर्ग में आनन्द करते हैं। श्रीमती गङ्गाजी के तीर में जो अनशन व्रत करके प्राण त्यागते हैं, वे शीघ्र ही मोक्ष पाते हैं। जो मनुष्य देह पाकर गङ्गाजी का सेवन नहीं करता, वह भव-बाधा से नहीं छूटता। पितरों का उद्देश्य करके जो मधु सहित पायस, गुड़, घी, तिल के साथ गङ्गाजी को समर्पण करते हैं, उनके पितर सौ वर्ष के लिये सन्तुष्ट होकर उन्हें अनेक प्रकार के मनोरथों से युक्त कर देते हैं। सत्ययुग में सर्वोत्तम पुष्कर तीर्थ, द्वापर में कुरुक्षेत्र, कलियुग में गङ्गा विशिष्ट हैं। तीन मास में सरस्वती का जल, सात मास में यमुना का, दस मास में नर्मदा का और एक वर्ष में गङ्गाजी का जल जीर्ण होता है। गङ्गाजी सब स्थानों में सुलभ हैं लेकिन गङ्गाद्वार, प्रयाग और गङ्गासागर इन तीन स्थानों में अत्यन्त दुर्लभ हैं। इन स्थानों में जो स्नान करते हैं, वे स्वर्ग चले जाते हैं और शरीर त्यागने वाले तो भव-बाधा ही से छूट जाते हैं। हर तरह का आनन्द देनेवाली श्रीमती गङ्गाजी में जो नररत्न स्नान कर अष्टाक्षर मंत्र को जपते हैं, उन्हें अनायास ही मुक्ति मिलती है। 'नमो नारायणाय' यही प्रणव सहित अष्टाक्षर मंत्र है। श्रीमती

गङ्गाजी की पूजा करने से सब देवों की पूजा हो जाती है, अतः यथासाध्य उनकी पूजा करनी चाहिये ।

॥ अथ यमुना महिमा ॥

(पद्मपुराणे)

कालिन्द्यामन्यतीर्थेभ्यः फलंस्नातुः शताधिकम् ।
गण्डूषमात्राम्बुपानान्नरो भवति सोमपः ॥
यत्किञ्चिद्दीयतेयस्यां वसिष्ठ स्वल्पमप्युत ।
सुमेरुसदृशं भूत्वा तद्दातुरुपतिष्ठति ॥
दूरस्थेनापि यमुना ध्याता हन्तिमनः कृतम् ।
वाचिकं कीर्तिता हन्ति स्नाता कायकृतंह्यघम् ॥
जप्त्वाऽस्यामेव गायत्रीमासहस्त्रमथोद्विजः ।
ब्रह्महत्याविमुक्तः स्यादश्वमेधफलं लभेत् ॥
सायं प्रातर्द्विजः संध्यामुपास्ते सकृदेवयः ।
कालिन्द्यां न सदोषेण सन्ध्यालोपस्य लुप्यते ॥
तर्पयित्वा नरो देवान्मनुष्यांश्च पितॄनपि ।
श्रद्धया यमुनावार्भिः पुनात्येव कुलत्रयम् ॥
यः स्नात्वा यमुनावार्भिः केशवं शिवमेववा ।
रविं वा पूज्ययेद्भक्त्या न सशोच्योभवेन्मृतः ॥
यदस्याः दक्षिणेकूले फलमुक्तं तवाधुना ।
तदेव तूत्तरे कूले फलं शतगुणाधिकम् ॥
यामुनेनोदरस्थेन पयःपङ्केन रेणुना ।
म्रियतेयोनरः पुत्र स नरो न भवेत्पुनः ॥
आदित्यदुहितर्देवि यमज्येष्ठे यशस्विनि ।
त्रैलोक्यवन्दिते पुण्ये पापं मे यमुनेहर ॥

कालिन्दी में स्नान करने से सब तीर्थों की अपेक्षा सौगुना अधिक फल होता है और गण्डूष मात्र भी जलपान करने से यज्ञ का फल मिलता है। हे वशिष्ठ! थोड़ा भी दान देने से सुमेरु के बराबर फल होता है। दूर से यमुनाजी का ध्यान, कीर्तन तथा स्नान करने से तीनों तरह (कायिक, वाचिक, मानसिक) के पापों से छूट जाते हैं। इसी में सहस्र गायत्री का जप करने से ब्रह्म-हत्यादि महापातकों से छूट जाता है और निष्पाप अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है। एक वार भी सायं प्रातः कालिन्दी में सन्ध्योपासन करने से सन्ध्या लोप के भय से छूट जाता है। मनुष्य देवर्षि, पितृ तर्पण श्रद्धापूर्वक करने से तीनों कुल को पवित्र करते हैं। जो कालिन्दी के जल से स्नान कर केशव, शिव या रवि की भक्तिपूर्वक पूजा करता है, वह शरीर त्यागने पर दुर्लभ गति को प्राप्त होता है। इसी का जो कुछ दक्षिण तट का माहात्म्य कहा गया है सौगुना अधिक उत्तर तट का है। यमुना जल पेट में रहने पर जो शरीर त्यागता है, वह देवयोनि को प्राप्त होता है। स्नान का मंत्र यह है "आदित्य दुहितर्देवि" इत्यादि। यमुना माहात्म्य का अन्त।

॥ अथ प्रयागीयनाना तीर्थानि ॥

(कौर्ममात्स्ये च)

कम्बलाश्वतरौ नागौ यमुनादक्षिणे तटे।
तत्र स्नात्वा पीत्वा च मुच्यते सर्वपातकैः ॥
पूर्वपार्श्वे गंगायास्त्रैलोक्ये ख्यातिमान्नृप।
अवटः सर्वसामुद्रः प्रतिष्ठाने च विश्रुतम् ॥
ब्रह्मचारी जितक्रोधस्त्रिरात्रं यदि तिष्ठति।
सर्वपापविशुद्धात्मा सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥

उत्तरेण प्रतिष्ठानाद्द भागीरथ्यास्तु पूर्वतः ।
हंसप्रपतनंनामतीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम् ॥
अश्वमेधफलं तत्र स्नानमात्रस्य जायते ।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावत्स्वर्गे महीयते ॥
यामुने चोत्तरे तीरे प्रयागस्य तु दक्षिणे ।
ऋणप्रमोचनंनामतीर्थं तु परमंस्मृतम् ॥
एकरात्रोषितः स्नात्वा ऋणात्तत्र प्रमुच्यते ।
सूर्यलोकमवाप्नोति अनृणी च सदाभवेत् ॥
अग्नितीर्थमितिख्यातं यमुनादक्षिणे तटे ।
पश्चिमेधर्मराजस्य तीर्थं त्वनरकं स्मृतम् ॥
तत्र स्नात्वादिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः ।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां स्नात्वा संतर्प्य वै शुचिः ॥
धर्मराजं महापापैर्मुच्यते नात्र संशयः ।
यत्रगंगा महाभागा स देशस्तत्तपोवनम् ।
सिद्धिक्षेत्रंतु तज्ज्ञेयं गंगातीरसमाश्रितम् ॥

(मत्स्यपुराणे)

ततो भोगवतींगत्वा वासुकेरुत्तरेण तु ।
दशाश्वमेधिकंचैव तीर्थं तत्र परं भवेत् ॥

(ब्रह्मपुराणे)

यमस्यभगिनी साक्षाद्भानोः कन्याऽतिपावनी ।
तत्र स्नात्वा नरायान्ति सूर्यमण्डल भेदिनः ॥
गंगायाः पश्चिमेतीरे ब्रह्मकुण्डोऽस्तिशोभनः ।
तत्राहमयजं देवमश्वमेधैर्दशोन्मितैः ॥

यमुनाजी के दक्षिणी किनारे पर कम्बल, अश्वतर नाग हैं वहाँ स्नान और पान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। गङ्गाजी के पूर्वी तट पर "अवट सर्वसामुद्र १" तीर्थ प्रसिद्ध है। क्रोधरहित ब्रह्मचर्य्य से त्रिरात्र वास करने से सब पापों से छूट कर अश्वमेध के फल को पाता है। उसी तीर्थ के उत्तर तथा गङ्गाजी के पूर्व दिशा में हंसप्रपतनक तीर्थ है। वहाँ केवल स्नान ही करने से अश्वमेध के फल का भागी होता है। जब तक चन्द्रमा और सूर्य्य आकाश में रहें तब तक वह आनन्द करता है। ऋणप्रमोचन तीर्थ किला के पश्चिम, मनकामेश्वर के पास है। एक रात्रि वास करने से तथा स्नान करने से मनुष्य सब ऋणों से छूट जाता है। उऋण होकर सूर्य्यलोक में चला जाता है। यमुनाजी के दक्षिणी किनारे पर अग्नितीर्थ तथा पश्चिम की ओर धर्मतीर्थ है। जिसके सेवन से नरक नहीं होता है। वहाँ स्नान करके स्वर्ग चले जाते हैं और मरनेवाले तो भवबाधा से भी छूट जाते हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को स्नान तथा तर्पण करके निर्मल हो जाते हैं। धर्मराज को संतुष्ट करके निस्सन्देह महापाप से छूट जाता है। जहाँ सर्वश्रेष्ठ गङ्गाजी हैं वही देश देश है और वही तपोवन है। जो गंगाजी के किनारे है वही सिद्धिक्षेत्र है। वासुकी के सीढ़ी के नीचे पूर्व की ओर भोगवती तीर्थ है और दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान करके अश्वमेध के फल का भागी होता है। यम की बहिन सूर्य्य की कन्या त्रिलोकपावनी यमुना जी हैं वहाँ स्नान करने वाले मनुष्य सूर्य्यमण्डल को भेद कर परलोक चले जाते हैं। गङ्गा जी के पश्चिमी तट पर अत्यन्त पवित्र ब्रह्मकुण्ड है। ब्रह्माजी कहते हैं कि वहाँ पर दश अश्वमेध यज्ञ किये हैं॥

---

१. उसी को आजकल समुद्रकूप कहते हैं।

॥ अथ प्रयागवासः ॥

(मात्स्ये)

प्रयागमनुगच्छेद्वा वसते वाऽपि यो नरः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा रुद्रलोकं स गच्छति ॥

(स्कान्दे)

तीर्थाभिलाषिभिर्मर्त्यैः सेव्यंतीर्थान्तरं न वै ।
अन्यत्र भूमिवलये तीर्थराजात्प्रयायतः ॥
ब्रह्महत्यादिपापानां प्रायश्चित्तचिकीर्षुणा ।
प्रयागं विधिवत्सेव्यं द्विजवाक्यान्नसंशयः ॥
किं वहूक्तेन विप्रेन्द्र महोदयमभीप्सुना ।
सेव्यं सितासितं तीर्थं प्रकृष्टं जगतीतले ॥
ततोगत्वा प्रयागंतु सर्वदेवाभिरक्षितम् ।
ब्रह्मचारी वसेन्मासं पितृन्देवांश्च तर्पयेत् ॥

मनुष्य प्रयाग जाय या वास करे तो हर तरह के पापों से छूट कर रुद्र लोक में निवास करता है। तीर्थाभिलाषियों को तीर्थराज प्रयाग छोड़ कर पृथ्वी के किसी तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं। ब्रह्महत्यादि महापापों के प्रायश्चित्त करने की अभिलाषा वालों को द्विजवाक्य से प्रयाग की विधिवत् सेवा करना चाहिये। अधिक कहने से क्या ? हे विप्रराज ! महोदय के प्राप्त की इच्छा करनेवालों को त्रिवेणी की विधिवत् सेवा करना चाहिये। फिर प्रयाग में जा मास भर ब्रह्मचर्य्य से निवास कर देवर्षि पितरों को तृप्त करना चाहिये।

॥ अथ वपन विचारः ॥

सप्तधातुमयीभूततनौ पापानि यानि वै।
केशेषु तानि तिष्ठन्ति वपनाद्यान्ति तान्यपि ॥
प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्।
दानं दद्यात्कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत् ॥
किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्।
कुरुक्षेत्रे च दानेन प्रयागे वपनं यदि ॥
केशानां यावती संख्या छिन्नानां जाह्नवीजले।
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥
गङ्गायां भास्करक्षेत्रे मुण्डनं यो न कारयेत्।
स कोटिकुलसंयुक्त आकल्पं रौरवे वसेत् ॥
केशानां नास्ति नारीणां वपनं व्रतयज्ञयोः।
गोवधादिषुसर्वेषु छेदयेदंगुलद्वयम् ॥
वेण्यां वेणीप्रदानेन सर्वं पापं प्रणश्यतु।
जन्मान्तरेष्वपि सदा सौभाग्यं मम वर्धताम् ॥
स्त्रीणां सभर्तृकाणां तु सर्वपापापनुत्तये।
प्रयागे वपनं कार्यं नान्यक्षेत्रे कदाचन ॥

पञ्चभौतिक शरीर में जितने पाप हैं वे सब बालों में रहते हैं। मुण्डन कराने से वे सब नष्ट हो जाते हैं। प्रयाग में मुण्डन गया में पिण्डदान, कुरुक्षेत्र में दान और काशी में शरीर-त्याग करना चाहिये। परन्तु प्रयाग में मुण्डन कराने से गया में पिण्ड-दान, काशी में शरीर-त्याग और कुरुक्षेत्र में दान करने की कोई आवश्यकता नहीं। जिस व्यक्ति के जितने कटे बाल गङ्गाजल में पड़ते हैं उसे उतनेही हजार वर्ष स्वर्गवास मिलता है। गङ्गा के तट पर और भास्करक्षेत्र में जो जाकर भी मुण्डन नहीं कराता वह करोड़ कुल सहित कल्प भर

रौरव नरक में वास करता है। व्रत, यज्ञ और गोवध आदि बड़े २ प्रायश्चित्तों में स्त्रियों के केश वपन की विधि नहीं है। किन्तु दो अंगुल कटवा देना चाहिये। त्रिवेणी में वेणी समर्पण करने से सब पाप नष्ट हो जायँ तथा जन्मान्तर में भी मेरे सौभाग्य बढ़ें। सधवा स्त्री को सब प्रकार के पापों से छूटने के लिये प्रयाग में वपन कराना चाहिये दूसरे तीर्थ में नहीं।

॥ अथ प्रकीर्णविषयाः ॥

अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी।
प्रयागे यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा॥

अरुणोदय के समय प्रयाग में यदि माघ शुक्ल सप्तमी मिले तो करोड़ सूर्यग्रहण के बराबर फल मिलता है।

॥ अत्र विधिर्भविष्ये वसिष्ठः ॥

कृत्वा षष्ठ्यामेकभक्तं सप्तम्यां निश्चलं जलम्।
रात्र्यन्ते चालयेथास्त्वं दत्वा शिरसि दीपकम्॥

षष्ठी में एक भक्त अर्थात् एक बार भोजन करे, सप्तमी में निश्चल जल रात्रि के अन्त में शिर पर दीप रख कर तुम चलाना।

अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः।
अर्धोदयः स विज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समा॥
अर्धोदये तु संप्राप्ते सर्वं गङ्गासमं जलम्।
शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसंमिताः॥
यत्किंचित् क्रियते तत्र तद्दानं मेरुसंनिभम्।
अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी।
गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा॥
वैशाखशुक्लपक्षे तु तृतीयायां विशेषतः॥
गंगातोये नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥

वैशाखशुक्लसप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा ।
क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणात् ॥
तां तत्र पूजयेद्देवीं गंगां गगनमेखलाम् ॥
ज्येष्ठेमासिक्षितिसुतदिने शुक्लपक्षे दशम्याम् ।
हस्तेशैलान्निरगमदसौ जाह्नवी मर्त्यलोकम् ॥
पापान्यस्यां हरतिहि तिथौ सदिशेत्याहुरार्याः ॥
पुण्यं दद्यादपि दशगुणं वाजिमेधायुतस्य ॥
वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी ।
गङ्गायां यदि लभ्येत् शतसूर्य्यग्रहैः समा ॥

यदि पौष माघ की अमावस्या अर्कपातश्रवण से संयुक्त हो तो अर्धोदय योग होता है। वह करोड़ों सूर्य्यग्रहों के तुल्य है। अर्धोदय होने पर सब जल गङ्गाजल के बराबर होते हैं। सब मनुष्य शुद्ध चित्त होकर ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। उस समय थोड़ा सा भी दान सुमेरु पर्वत के समान होता है। माघ शुक्लपक्ष सप्तमी को अरुणोदय के समय यदि गङ्गाजी मिलें तो, सौ सूर्य्यग्रहण के फल के बराबर होता है। बैसाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को मनुष्य गङ्गाजल में स्नान करने से सब पापों से छूट कर सद्गति पाता है। वैशाख शुक्ल सप्तमी में जह्नु ऋषि ने क्रोध करके गङ्गाजल पी लिया फिर दाहिने कान से निकाल दिया। गगनमेखला गङ्गाजी की पूजा करना चाहिये। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी भौमवार को गङ्गाजी पहाड़ से निकल कर मृत्युलोक में आई हैं इसी तिथि में स्नान करने से गङ्गाजी दस तरह के पापों का नाश करती हैं। ऐसा आर्य्य लोग कहते हैं। शतभिष नक्षत्र से युक्त चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को यदि गङ्गाजी मिलें तोकोटि सूर्य्यग्रहों के बराबर फल होता है।

॥ हरिद्वारकुम्भः ॥

पद्मिनीनायकोमेषे कुम्भराशिगतो गुरुः ।
गङ्गाद्वारेभवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तमः ॥

सूर्य मेष राशि पर हों और बृहस्पति कुम्भ राशि पर हों तो हरिद्वार क कुम्भ होता है ।

॥ प्रयागकुम्भः ॥

माघे मेषगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ ।
अमावास्या तदायोगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके ॥

माघ में मेष राशि पर गुरु हों तथा मकर राशि पर सूर्य और चन्द्रमा हों साथ ही अमावस्या का योग हो तो प्रयाग का कुम्भ होता है ।

॥ उज्जैनकुम्भः ॥

घटे गुरुः शशिःसूर्यः कुह्वांदामोदरोयदा ।
धरायां च यदाकुम्भो जायते खलुमुक्तिदः ॥

कुम्भ राशि पर बृहस्पति, चन्द्र और सूर्य हों कुहू के दामोदर हों तो पृथ्वी में मुक्तिप्रद कुम्भ होता है ।

॥ गोदावरीकुम्भः ॥

कर्के गुरुस्तदा भानुश्चन्द्रश्चयस्तदा ।
गोदावर्य्यां तदाकुम्भो जायतेऽवनिमण्डले ॥

कर्क राशि पर गुरु और भानु हों तथा अमावस्या का योग हो तो पृथ्वीमण्डल में गोदावरी का कुम्भ होता है ।

॥ पुष्करपर्वयोगः (पुष्करस्नानम्) ॥

विशाखस्थोयदाभानुः कृत्तिकासु च चन्द्रमा ।
संयोगः पुष्करोनाम पुष्करेष्वति दुर्लभः ॥

विशाखा के सूर्य हों, कृत्तिका के चन्द्रमा हों तो पुष्कर क्षेत्र में अत्यन्त दुर्लभ पुष्कर योग होता है ।

॥ गोविन्दद्वादशी पर्वयोगः ॥

यदाचापेजीवे भवतिघटराशौ दिनमणि-
स्तथातारानाथः स्वभवनगतः फाल्गुनसिते ।
यदार्कोद्वादश्यां भवतिगुरुभं शोभनयुतं-
यदागोविन्दाख्यं हरिदिवसमस्मिन् भुवितले ॥

धन के बृहस्पति हों, कुम्भ के सूर्य हों, कर्क के चन्द्रमा हों फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को रविवार हो, और पुष्य नक्षत्र हो तो गोविन्द द्वादशी नाम का पर्व होता है ।

॥ कपिला षष्ठीयोगः (तीर्थ स्नानः) ॥

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमेऽष्ट रोहिणी ।
व्यतीपातस्तथा षष्ठी कपिलानन्तपुण्यदा ॥

आश्विन कृष्णपक्ष षष्ठी मङ्गल के दिन यदि रोहिणी नक्षत्र हो और व्यतीपातयोग हो तो अनन्त पुण्य देनेवाली कपिला षष्ठी होती है ।

उदक्यां सूतिकां नारीं भर्तृघ्नीं गर्भपातिनीम् ।
पाखण्डं पतितं व्रात्यं महापातकिनं शवम् ॥
नास्तिकं कितवं स्तेनं कृतघ्नं नाभिवादयेत् ।
मत्तं प्रमत्तमुन्मत्तं धावंतमशुचिं नरम् ॥
वमंतं जृम्भमाणं च कुर्वन्तं दन्तधावनम् ।
अभ्यक्तं शिरसि स्नानं कु[illegible]भिवादयेत ॥ इतिशातातपः

॥ [illegible]

जपयज्ञजलस्थं च सामि[illegible]पकुशान् तिलान् ।
उदपात्रार्घ्यभैक्षान्नं वहन्तं नाभिवादयेत ॥
अभिवाद्य द्विजश्चैतानहोरात्रेण शुध्यति ॥

क्षत्रवैश्याभिवादने विप्रस्यैवं शूद्राभिवादने त्रिरात्रं कार्यन्तु
रजकादिषु

"चाण्डालादिषु चान्द्रं स्यादितिसंग्रहकृत्स्मृतम् ॥" जमदग्निः

'देवताप्रतिमाम् दृष्ट्वा पतिश्चैव त्रिदण्डितम् ।
नमस्कारं न कुर्याच्चेदुपवासेन शुध्यति ॥"

पक्षान्तरे

सर्वे वापि नमस्कार्या सर्वावस्थासु सर्वदा ।
अभिवादो नमस्कारस्तथा प्रत्यभिवादनम् ॥
आशीर्वाच्या नमस्कार्य्यैर्वयस्यस्तु पुनर्नमेत् ।
स्त्रियो नमस्या वृद्धाश्चवयसा पत्युरेवताः ॥

ऋतुमती, प्रसूतिका, पति का नाश करने वाली, गर्भ गिरानेवाली स्त्री को, तथा पाखण्डी, पतित, लुप्त संस्कार वाले, महापातकी, नाश, परलोक को न मानने वाले, धूर्त, चोर और किये हुये उपकार को न मानने वाले को प्रणाम नहीं करना चाहिये । मतवाला, प्रमादी, उन्मादी, दौड़नेवाले, अपवित्र पुरुष, वमन कराने वाले, जम्हुआते हुये, उबटन लगाते हुये, ऊपर से जल छोड़कर स्नान करते हुये को प्रणाम नहीं करना चाहिये । ये शतातप के वाक्य हैं ।

जप, यज्ञ करते हुये, जल में स्थित, लकड़ी, फूल, कुश और तिल, जल का पात्र तथा भिक्षान्न लाते हुये को प्रणाम नहीं करना चाहिये । ब्राह्मण [illegible] सबों से प्रणाम करे तो एक रात दिन में शुद्ध [illegible] स्पति के वाक्य हैं । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य [illegible] करे तो अहोरात्रि में शुद्र अभिवादन करे तो [illegible], धोबी और चाण्डाल अभिवादन करें तो एक चान्द्रायण व्रत से शुद्ध होते हैं । ये जमदग्नि के वचन हैं ।

देवमूर्त्ति तथा संन्यस्त पति को देखकर जो नहीं नमस्कार करती वह उपवास से शुद्धि होती है।

पक्षान्तरे:- सब को सब दशा में हमेशा नमस्कार करना चाहिये। प्रणाम, नमस्कार तथा आशीर्वाद देना चाहिये। बड़ा आशीर्वाद देवे, बराबर वाला नमस्कार करे। वृद्धा स्त्री को नमस्कार करे बराबर अवस्था वाली स्त्री पति को नमस्कार करे।

॥ अवसर विशेषफलाधिक्यम् ॥

संक्रान्तौ रविवारे च सप्तम्यां वैधृतौ तथा।
व्यतिपाते हस्तर्क्षे ह्यपि पौष्णेपुनर्वसौ॥
एकादश्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां दिनक्षये।
पूर्णिमायां च पूर्वोक्तं फलंशतगुणं भवेत्॥
तदेव स्याल्लक्षगुणं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
द्वादश्यामर्चयेद्विष्णुमेकादश्यामुपोषितः॥
कालिन्द्यां तस्यसुलभं तद्विष्णोः परमंपदम्॥

संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी, वैधृति, व्यतीपात तथा हस्त, रेवती, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में तथा एकादशी, चतुर्दशी, अष्टमी, दिनक्षय व पूर्णिमा इन विशेष अवसरों पर स्नान करने से मनुष्य को पूर्वोक्त फल की अपेक्षा सौ गुना अधिक फल होता है। सूर्य, चन्द्र ग्रहण के समय स्नान करने से इसमें भी लक्षगुणा अधिक फल होता है। [illegible] व्रत रहकर द्वादशी को जो लोग श्रीविष्णु [illegible], उन्हें यमुनाजी में परमपद सुलभ है [illegible]

शम्भोरम्भोमयीमू[illegible]स्थिकपालिनी।
महामणिफणाकोपभैरवी [illegible] प्रेतसंस्थिता॥
अविमुक्तश्मशानेयं हैमवत्यां श्रितादिशम्।

निजाश्रिता चतुर्वर्गसिद्धिसाधनतत्परा ॥
जगत्पापविनाशाय पयोरुपांमहानदी ॥

श्रीमती यमुनाजी के स्नान के समय जो लोग इन नामों का ध्यान करते हैं, वे लोग सुदुर्लभ फल भागी होते हैं।

॥ यमुनानामकीर्तनात् फलाधिक्यकथनम् ॥

त्रयीमयीनदी सौरी ब्रह्मविद्यासुधावहा ।
नारायणीश्वरीब्राह्मी धर्ममूर्तिः कृपावती ॥
कालिन्दीकालसलिला सर्वतीर्थमयीनदी ।
नीलोत्पलदलश्यामा महापातकभेषजम् ॥
कुमारीविष्णुदयिता अवारितगतिः सरित् ।
एतैर्नामपदैर्यस्तु यमुनां कीर्तयेन्नरः ॥
दूरस्थोऽपि स पापेभ्योमहद्भ्योऽपि प्रमुच्यते ॥

श्रीमती यमुनाजी के इन नामों का जप करने से दूरस्थ भी मनुष्य बड़े बड़े पापों से विनिर्मुक्त हो जाते हैं।

॥ अथ परिशिष्टप्रकरणम् ॥

माघोगर्जतियज्ञेभ्यो माघोयोगाच्च गर्जति ।
तीव्राच्चतपसोमाघो वेदशास्त्रेषु गर्जति ॥
सर्वतीर्थेषु ... हुय, जल म...स्नानं क...तियः ।
संसारसा... त्र तथा भिक्षान्न लाते ...ागवान् ॥
... पण ... योगः (पुष्क... सबों से

यज्ञ, योग, अ... ...भानुः कृ... ...स्पति के जो कार्य्य नहीं हो सकता वह माघ स्ना... ...करते हैं। करतलगत होता है इसी तरह दुर्लभ से दु... ...र्भ, मनोरथ माघ स्नायी के अचिन्त्य प्रभाव माघ में त्रिवेणी स्नान से सिद्ध होते हैं यह वेद शास्त्र स्मृतियों में सुप्रसिद्ध है।